Module-1 Demand and Supply: Basic Concepts

अर्थशास्त्रियों ने माँग शब्द को अलग अलग अर्थों में परिभाषित किया है। हम परिभाषाओं को इस तरह वर्गों में संकलित अध्ययन करेंगे।

(1) प्रथम वर्ग — वेबस्टर के शब्दों में "माँग केवल एक इच्छा है। दूसरे शब्दों में परिभाषित होती है (i) किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा (ii) उसे क्रय करने की क्षमता (iii) उस धनराशि को वस्तु खरीदने के लिए प्रयोग करने की तत्परता।

परन्तु यह परिभाषा उचित नहीं है क्योंकि माँग एक उद्देश्यपूर्ण क्रियात्मक की अर्थ लगाया गया है। केवल इसी उद्देश्यपूर्ण को हम माँग कहते हैं जो पूरी की जाती है। इसके अलावा माँग एक ही मूल्य एवं समय के सम्बन्ध में वस्तु की जाती है।

द्वितीय वर्ग — प्रो० मिल के शब्दों में माँग का अभिप्राय किसी वस्तु की उस मात्रा से है जो एक निश्चित मूल्य पर खरीदी जाती है। इस अर्थ में माँग सदा मूल्य से सम्बन्धित रहती है।

बार्ड के अनुसार "किसी वस्तु की माँग उसकी कीमत और उस मात्रा का सम्बन्ध होती है जो कीमत विशेष पर खरीदी जाती है।

(3) तीसरा वर्ग — वेबस्टर के शब्दों में "किसी दिये हुए मूल्य पर वस्तु की माँग उस परिमाण को कहते हैं जो उस मूल्य पर अनिश्चित समय में क्रय की जाती है।

मार्शल के अनुसार — किसी वस्तु की माँग उन मात्राओं की सारणी होती है जिन्हें क्रेता समय-विशेष पर सभी सम्भव मूल्यों पर खरीदने को तैयार रहता है।

तीनों वर्गों की परिभाषाओं का अध्ययन करने पर पता चलता है कि तीसरे वर्ग की दी हुई परिभाषा अधिक स्पष्ट एवं तार्किक है क्योंकि इसके अन्दर माँग की पाँच तत्व आते हैं (i) किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा (ii) उसे क्रय करने का साधन (iii) साधनों को व्यय करने की तत्परता (iv) वस्तु की इच्छा का कीमत विशेष से सम्बन्धित होना (v) माँग का सम्बन्ध किसी विशेष समय से होना।

माँग फलन एवं माँग को प्रभावित करने वाले तत्व

माँग फलन का आशय इस बात को पता लगाना होता है कि कौन कौन से तत्व माँग को निर्धारित करते हैं? प्रो० वाटसन के अनुसार "किसी बाजार में एक निश्चित समय पर किसी वस्तु की माँग फलन उस वस्तु को खरीदने वाले विभिन्न मात्राओं तथा उन मात्राओं को निर्धारित करने वाले तत्वों के बीच के सम्बन्ध को व्यक्त करता है। मान लिजिए माँग को प्रभावित करने वाले मुख्य

Scanned with CamScanner

घटक निम्नलिखित है (1) वस्तु की अपनी कीमत Px
(2) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें Py (3) उपभोक्ता की आय Y
(4) उपभोक्ता की रुचियाँ एवं प्राथमिकताएँ T (5) भविष्य परिवर्तन की सम्भावनाएँ E (6) जनसंख्या का आकार P (7) स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतें Pxs

$D_x = f(P_x, P_y, Y, T, E, P, P_{xs})$ जहाँ D_x x के लिए माँग, P_x x वस्तु की कीमत इत्यादि अक्षर परिवर्तन है

माँग वक्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि बाजार में किसी वस्तु की माँग को प्रभावित करने वाले घटक निम्नलिखित है

(1) वस्तु की कीमत — किसी वस्तु की माँग उसकी कीमत पर निर्भर करती है। वस्तु की माँग एवं कीमत में विपरीत सम्बन्ध होता है

(2) उपभोक्ता की आय — वस्तु की माँग उपभोक्ता की आय पर निर्भर करती है। उपभोक्ता की आय से माँग धनात्मक रूप से प्रभावित होता है जो वस्तुएँ कैरन के अन्तर्गत है इनकी कीमत बढ़ जाने पर यदि लोग उपभोग को घटा देते है और कैरन वस्तु होने से वस्तु सस्ती होने पर लोग उसे भी खरीदते है।

(3) ऋतु में परिवर्तन — ऋतु परिवर्तन के साथ ही माँग बदल जाती है जैसे कपड़ों की माँग जाड़े में सिल्की अच्छी होती है गर्मी में इसकी नहीं होती है।

(4) जनसंख्या में परिवर्तन — जनसंख्या में परिवर्तन से वस्तु की माँग में भी परिवर्तन आता है। जनसंख्या कम होने से उपभोक्ता वस्तुओं की माँग कम हो जाती है और जनसंख्या बढ़ने पर वस्तु की माँग बढ़ जाती है

(5) मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन — जब देश में मुद्रा की मात्रा बढ़ा दी जाती है तब मुद्रा स्फीति आ जाता है फलस्वरूप वस्तु की प्रभावपूर्ण माँग कम हो जाती है। और जब मुद्रा की मात्रा घटा दी जाती है तो स्फीति एवं स्तर गिर जाता है।

(6) राष्ट्रीय धन का वितरण — यदि करारोपण द्वारा उच्च समूहों से धन का अमीरों से गरीबों की ओर हस्तांतरण होता है तो विलासिता की वस्तुओं की माँग में कमी आती है और जीवन उपयोगी वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है

(7) व्यापार चक्र की अवस्था — तेजी के काल में वस्तुओं की मूल्य अधिक होने पर भी माँग बढ़ जाती है क्योंकि लोगों की मौद्रिक आय बढ़ जाती है। इसके विपरीत मन्दी के समय लोगों की आय कम होने के कारण वस्तु की माँग कम हो जाती है

(8) बचत करने की प्रवृत्ति में परिवर्तन — यदि लोगों में बचत करने की प्रवृत्ति अधिक सक्रिय हो जाती है तो निश्चित ही व्यय करने की राशि में कमी हो जायेगी और वस्तु की माँग में कमी आ जायेगी।

Scanned with CamScanner

मांग के रूप

मांग को मुख्य रूप से तीन वर्गों में बांटा जा सकता है जो निम्नवत

(1) कीमत मांग — कीमत मांग किसी वस्तु की उन मात्राओं को दिखाती है जो कि एक उपभोक्ता एक निश्चित समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने को तैयार है यदि अन्य बातें समान रहें। यहां अन्य बातें असामान्य रहने का तात्पर्य है कि उक्त समय में मांग को प्रभावित करने वाले तत्व की कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसे चित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है। चित्र में DD मांग की रेखा बाएं से दाहिने नीचे की ओर गिरती है, जिसका अर्थ है कि यदि कीमत बढ़ती है तो मांग घटती है और कीमत घटने पर मांग बढ़ती है। चित्र में मांग वक्र स्पष्ट करता है कि कीमत OP₁ से बढ़कर OP₂ हो जाने पर वस्तु की मांग OQ₁ से घटकर OQ₂ हो जाती है। प्रत्येक उपभोक्ता की इस तैयार की मांग व्यक्तिगत मांग कहलाती है। परन्तु वस्तुओं और सेवाओं की उपभोक्ताओं की सम्मिलित मांग को बाजार मांग कहते हैं

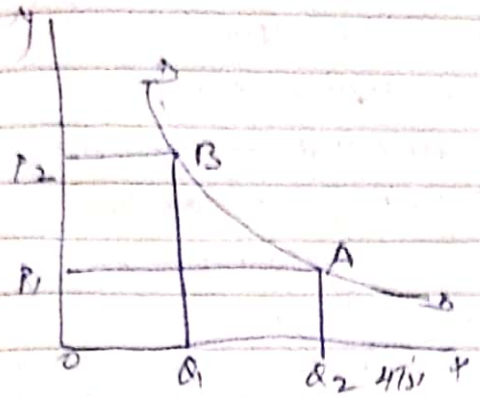

(2) आय मांग — आय मांग से अभिप्राय वस्तुओं एवं सेवाओं की उन मात्राओं से है जो समय की दी हुई अवधि में, अन्य बातों के पूर्ववत रहने पर उपभोक्ता विभिन्न आय स्तरों पर खरीदने के लिए तैयार है। आय मांग रेखा को एंजिल रेखा भी कहते हैं।

जिस प्रकार कीमत मांग कीमतों तथा मात्राओं के सम्बन्ध को बताती है उसी प्रकार आय मांग आय तथा मांग की गई वस्तु या सेवाओं की मात्राओं को बताता है

वस्तुएं दो प्रकार की होती हैं (1) श्रेष्ठ वस्तुएं (2) हीन वस्तुएं। जहां तक श्रेष्ठ किस्म की वस्तुओं का प्रश्न है आय मांग वक्र का ढाल धनात्मक होता है अर्थात यह ऊपर खाड़े और चढ़ता चला जाता है। कुछ हीन किस्म की वस्तुएं होती हैं जिन्हें गिफिन वस्तुएं कहते हैं। इन पर यह नियम लागू नहीं होता है। हीन वस्तुएं वे हैं जिन्हें उपभोक्ता हीन दृष्टि से देखते हैं जैसे मोटा कपड़ा, जौ, बाजरा इत्यादि। इन वस्तुओं की मांग आय में वृद्धि के साथ साथ घटती जाती है। हीन वस्तुओं की आय मांग रेखा का ढाल ऋणात्मक होता है। अर्थात यह खाड़ी और नीचे झुकती है। चित्र में श्रेष्ठ वस्तुओं की आय मांग रेखा प्रदर्शित करता है। इसमें OR आय पर वस्तु की मांगी गई मात्रा OM है। परन्तु यदि आय बढ़कर OR_1 हो जाती है तो वस्तु की मांग बढ़कर भी OM_1 हो जाती है। इसी तरह चित्र हीन वस्तुओं की आय मांग रेखा प्रदर्शित करता है। OR आय पर वस्तु की OM मांगी जाती है। परन्तु अगर आय बढ़कर OR_1 हो जाती है तो मांग घटकर OM_1 हो जाती है

Scanned with CamScanner